वाले महर्षियों के लिए भी इनका संयम करना दुष्कर है। परन्तु कृष्णभावनाभावित होकर भक्तियोग के परायण हुए भक्त की सद्योमुक्ति हो जाती है। आत्मतत्त्व का पूर्ण ज्ञाता होने से वह नित्य समाधिस्थ रहता है। उदाहरणार्थः

दर्शन ध्यान संस्पर्शैर्मत्स्यकूर्मविहंगमाः।
स्वान्यपत्यानि पुष्णन्ति तथाहमपि पद्मज।।

'मछली, कछुआ और पक्षी क्रमशः दर्शन, ध्यान तथा स्पर्श द्वारा अपनी सन्तति का पालन करते हैं। हे पद्मयोनि (ब्रह्मा)! मैं भी ऐसा ही करता हूँ।'

मछली केवल देखकर अपनी संतान का पालन करती है। कूर्म केवल ध्यान द्वारा अपनी सन्तान का पोषण करता है; उसके अण्डे भूमि पर रहते हैं और वह स्वयं जल में उनका ध्यान करता रहता है। इसी भाँति, भगवद्धाम से अति दूर होने पर भी कृष्णभावनाभावित पुरुष भगवान् का निरन्तर चिन्तन करने मात्र से, अर्थात् कृष्ण-भावनामृत में संलग्न रहकर भगवद्धाम को प्राप्त हो सकता है। उसे प्राकृत दुःख नहीं सताता। जीवन की इस स्थिति को 'ब्रह्मनिर्वाण' कहते हैं, जिसका अर्थ है परतत्त्व में निरन्तर निमग्नता के फलस्वरूप प्राकृत दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति।

२५/५

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।।२७।।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।।२८।।

स्पर्शान्=शब्दादि इन्द्रियविषयों को; **कृत्वा**=करके; **बहिः**=बाहर; **बाह्यान्**=अप्रयोजनीय; **चक्षुः**=नेत्र; **च**=भी; **एव**=निःसन्देह; **अन्तरे**=मध्य में; **भ्रुवोः**=भृकुटी के; **प्राण-अपानौ**=प्राण-अपान; **समौ**=सम; **कृत्वा**=करके; **नासा-अभ्यन्तर**=नासा के भीतर; **चारिणौ**=चलने वाले; **यत**=संयमित; **इन्द्रिय**=इन्द्रिय; **मनः**=मन; **बुद्धिः**=बुद्धि; **मुनिः**=योगी मुनि; **मोक्षपरायणः**=मोक्षपरायण; **विगत**=रहित; **इच्छा**=कामना; **भय**=भय; **क्रोधः**=क्रोध से; **यः**=जो (है); **सदा**=नित्य; **मुक्तः एव**=मुक्त ही है; **सः**=वह।

अनुवाद

सम्पूर्ण इन्द्रिय विषयों को बाहर ही त्याग कर, दृष्टि को भृकुटी के मध्य में केन्द्रित रखते हुए नासिका में विचरने वाले प्राणापान को रोक कर चित्त, इन्द्रियों तथा बुद्धि को वश में करने वाला योगी इच्छा, भय और क्रोध से पूर्ण मुक्त हो जाता है। इस अवस्था में निरन्तर रहने वाला निस्सन्देह जीवन्मुक्त है।।२७-२८।।

तात्पर्य

कृष्णभावनामृत में संलग्न होते ही तत्काल अपने आत्मस्वरूप का बोध हो